SHRI BHAGWAT JHA AZAD: Sir, I introduce the Bill.

श्री उपसभापति : सदन की कार्यवाही ढाई बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

The House then adjourned for lunch at seven minute's past one of the clock.

The House re-assembled after lunch at thirty-four minutes past two of the clock

[The Vive-Chairman Dr. (Shrimati) Naima Heptulla *in the Chair],*

THE CONSTITUTION (AMENDMENT) BILL, 1982 (Insertion of new article 343A)

SHRI SYED SHAHABUDDIN (Bihar): Madam, I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Constitution of India.

The quesiton was pm and tlie motion was adopted.

SHRI SYED SHAHABUDDIN : Madam, 1 introduce the Bill.

THE CONSTITUTION (AMENDMENT) BILL, 1982 (to amend articles 16,19, 30 and omission of article 347)

SHRI BISWA GOSWAMI (Assam): Madarn, I beg td move for leave to introduce a Bill further to amend the Constitution of India.

The qnestion was put and the motion was adopted.

SHRI BISWA GOSWAMI: Madam, I introduce the Bill.

THE PROMOTION OF SECULARISM BILL, 1982

SHRI SYED SHAHABUDDIN (Bihar): Madam, 1 beg to move for leave to introduce a Bill to provide for the application of the principles of secularism in Govemment and administration.

The qnestion was put and the motion was adopted.

SHRI SYED SHAHABUDDIN : Madam, I introduce the Bill.

THE CONSTITUTION (AMENDMENT) BILL, 1977 (to amend articles 120, 210, insertion of sew article 342-A and amendment of articles 343, 344, 346, 348 and 368) Contd.

श्री हुक्मदेव नारायण यादव (बिहार) : उपाध्यक्ष महोदया, उस दिन इस विधेयक पर जो बहस चल रही थी मैंने सदन के सामने निवेदन यह किया था और मैंने अपने भाषण के क्रम में यह जरूर कहा था कि सरकार के जरिए हिन्दी की घोर उपेक्षा हो रही है। आज जो यह विधेयक लाया गया है कि अंग्रेजी को अनिवार्य किया जाय, हिन्दी को खत्म किया जाय तो यह हिन्दी वालों की उदारता का दुष्परिणाम है क्योंकि हिन्दी वालों ने इतनी उदारता बरती कि जिस समय संविधान बन रहा था उस समय यह कहा गया था कि 15 वर्षों तक हिन्दी अंग्रेजी साथ चलती रहेगी। 15 वर्षों तक उस प्रावधान को हम ने माना। उससे भी आगे अंग्रेजी को चलाने की जरूरत हुई तो हिन्दी वाले उस को मानते चले गये और जिसका दुष्परिणाम यह निकल रहा है कि कहा जा रहा है कि अंग्रेजी को ही हिन्दुस्तान में रहने दो और यह उनके जरिए कहा जा रहा है जिनकी मातृभाषा अंग्रेजी नहीं है बल्कि जिन की मातृभाषा तमिल है,